क्या आपके पास 5 मिनट हैं ?

गर्भ की वह मासूम बच्ची अभी दस सप्ताह की थी व काफी चुस्त थी। हम उसे अपनी माँ की कोख में खिलते करवट बदलते व अंगूठा चूसते हूए देख रहे थे। उसके दिल की धडकनो को हम देख पा रहे थे। और उस समय 120 की साधारण गति से धडक रही थी। सब कुछ सामान्य था किन्तु जैसे पहले औजार (सक्सन पम्प) ने गर्भाशय की दिवार को छुआ तो वह मासूम बच्ची डर से एकदम घूमकर सुकड गई, और उसके दिल की धडकन काफी बढ गई, हालांकि अभी तक किसी औजार ने बच्ची को छुआ तक भी नही था लेकिन उसे अनुभव हो गया था कि कोई चीज उसके आरामगाह उसके सुरक्षित क्षेत्र पर हमला करने का प्रयत्न कर रही हैं।

हम दहशत सें भरे यह देख रहे थे कि किस तरह व औजार उस नन्ही मुन्नी मासूम गुडिया सी बच्ची के टुकडे टुकडे कर रहा थो पहले कमर (Spine) फिर पैर इत्यादि के टुकडे ऐसे काटे जा रहे थे जैसे वह जीवित प्राणी ना होकर कोई गाजर मूली हो। और वह बच्ची दर्द व पीडा से छटपटाती हुई सिकुड सिकुडकर घूम घूमकर तडपती हुई इस हत्यारे औजार से बचने का प्रयास कर रही थी। वह इतनी बुरी तरह से डर गयी थी कि एक समय उसकी दिल की धडकन 200 तक पहुंच गई। मैंने स्वयं अपनी आंखों से उसको अपना सिर पीछे झटकते वह मुॅह खोलकर चीखने का प्रयत्न करते हुए जिसे मूक चीख या मूक पुकार कहा जा सकता हैं, स्वयं देखा। अन्त में हमने वह नृशंस और विभत्स दृश्य भी देखा जब सडसी (Forceps) उसकी खोपडी को तोडने के लिए तलाश रहा था, फिर दबाकर उस कठोर खोपडी को तोड रहा था, क्योंकि सिर का वह भाग बैगेर तोडे सक्सन टयूब के माध्यम से बाहर नहीं निकाला जा सकता था। हत्या के इस विभत्स खेल को सम्पन्न करने में करीब 15 मिनट का समय लगा और इस दर्दनाक दृश्य का अनुमान इससे अधिक और कैसे लगाया जा सकता हैं। कि जिस डॉ. ने यह एर्बोशन गर्भापात किया था यह और जिसने मात्र कौतुहल वश इसकी फिल्म बनवा ली थी उसने जब स्वयं इस फिल्म को देखा तो वह अपना (Clinic) अस्पताल छोडकर चला गया और फिर वापस नही आया।